प्राप्त नहीं होते और फिर उससे भी परम अधम गति में गिरते हैं।।२०।।

तात्पर्य

श्रीभगवान् को परम करुणामय कहा जाता है; परन्तु यहाँ लगता है कि वे आसुरी स्वभाव वालों पर कभी दया नहीं करते। उन्हें जन्म-जन्म में उनके जैसे असुरों के गर्भ में ही गिराया जाता है। इस प्रकार श्रीभगवान् की करुणा से वंचित हुए वे निरन्तर अधःपतन को प्राप्त होते हैं और अन्त में कूकर-शूकर योनियों को धारण करते हैं। स्पष्ट कहा गया है कि इन असुरों को किसी भी अवस्था में भगवत्कृपा की प्राप्ति का अवसर प्रायः कभी नहीं मिल सकता। वेदों में भी कहा है कि ऐसे प्राणी शनैः-शनैः गिर कर कूकर-शूकर बन जाते हैं। यह तर्क उठ सकता है कि यदि यह सत्य है कि श्रीभगवान् ऐसे असुरों पर दया नहीं करते, तो उन्हें दयामय क्यों कहा जाता है? इसके उत्तर में 'वेदान्तसूत्र' में कथन है कि श्रीभगवान् किसी जीव से द्वेष नहीं करते। असुरों को परम अधम गति में गिराना भी उनकी करुणा का ही एक रूप है। श्रीभगवान् कभी-कभी स्वयं असुरों का वध करते हैं; परन्तु यह भी उनके लिए परम कल्याण का कारण सिद्ध होता है। वैदिक शास्त्रों का सिद्धान्त है कि जो कोई श्रीभगवान् के हाथ से मारा जाता है, वह सद्योमुक्ति-लाभ करता है। इतिहास में रावण, कंस, हिरण्यकशिपु जैसे अनेक असुरों का विवरण है, जिनका वध करने के लिए श्रीभगवान् ने नाना अवतार धारण किए। अतएव श्रीभगवान् के द्वारा मारे जाने के रूप में भाग्यशाली असुरों पर उनकी करुणा प्रकट होती है।

त्रिविधं नरकस्येदं द्वारं नाशनमात्मनः।
कामः क्रोधस्तथा लोभस्तस्मादेतत्त्रयं त्यजेत्।।२१।।

त्रिविधम्=तीन प्रकार के; **नरकस्य**=नरक के; **इदम्**=यह; **द्वारम्**=द्वार हैं; **नाशनम्**=नाश करने वाले; **आत्मनः**=आत्मा का; **कामः**=काम; **क्रोधः**=क्रोध; **तथा**=और; **लोभः**=लोभ; **तस्मात्**=इसलिए; **एतत्**=इन; **त्रयम्**=तीनों को; **त्यजेत्**=त्याग देना चाहिए।

अनुवाद

काम, क्रोध और लोभ—ये तीनों आत्मा का अधःपतन करने वाले साक्षात् नरक के द्वार हैं। इसलिए बुद्धिमान् मनुष्य को इन तीनों को त्याग देना चाहिए।।२१।।

तात्पर्य

आसुरी जीवन का सूत्रपात किस प्रकार होता है—यह यहाँ बताया गया है। मनुष्य अपने काम-विकार को तृप्त करने का प्रयत्न करता है और ऐसा न कर सकने पर उसमें क्रोध और लोभ का उदय हो जाता है। जो बुद्धिमान् मनुष्य आसुरी योनियों में गिरना नहीं चाहता, उसे इन तीनों शत्रुओं को त्यागने का पूरा प्रयास करना चाहिए, क्योंकि इनसे उस सीमा तक आत्मनाश हो सकता है कि फिर इस भवबन्धन से मुक्ति की कोई संभावना ही न रहे।